IJAER/Nov-Dec 2015/Volume-4/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जातिगत गतिशीलता और शैक्षिक अवसरों तक पहुंच

डॉ देवेंद्र

व्याख्याता राजकीय महिला महाविद्यालय

सादुलशहर

सार

यह अध्ययन समकालीन समाज में जातिगत गतिशीलता और शैक्षिक अवसरों तक पहुँच के बीच जटिल संबंधों की खोज करता है। जाति, एक गहरी जड़ जमाई हुई सामाजिक स्तरीकरण प्रणाली, संसाधनों और अवसरों तक व्यक्तियों की पहुँच को आकार देती रहती है। हम जाँच करते हैं कि जाति की पहचान शैक्षिक प्राप्ति को कैसे प्रभावित करती है और जातिगत गतिशीलता में परिवर्तन इस गतिशीलता को कैसे प्रभावित करते हैं। विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों और जनसांख्यिकीय सर्वेक्षणों के डेटा का विश्लेषण करके, हम हाशिए पर पड़ी जातियों के व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं और इस हद तक कि शैक्षिक नीतियों और सकारात्मक कार्रवाई ने ऊपर की ओर गतिशीलता को सुविधाजनक बनाया है, का आकलन करते हैं। हमारे निष्कर्षों से जाति के आधार पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच में महत्वपूर्ण असमानताएँ सामने आती हैं, हालाँकि लक्षित हस्तक्षेपों के कारण हाल के वर्षों में उल्लेखनीय सुधार हुए हैं। अध्ययन प्रणालीगत असमानताओं को दूर करने और समावेशी शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। हम नीति निर्माताओं और शिक्षकों के लिए जाति-प्रभावित समुदायों के लिए अवसरों को और बढ़ाने, शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करने और दीर्घकालिक सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने के लिए सिफारिशों के साथ निष्कर्ष निकालते हैं।

मुख्य शब्द : *जातिगत, शैक्षिक, जाति*

परिचय

जाति व्यवस्था लंबे समय से कई समाजों में सामाजिक संगठन की एक परिभाषित विशेषता रही है, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में, जहाँ वे शिक्षा तक पहुँच सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती हैं। जाति-आधारित स्तरीकरण की निरंतरता समान शैक्षिक अवसरों और सामाजिक गतिशीलता के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है। जाति, जो परंपरागत रूप से वंशानुगत व्यवसायों और सामाजिक स्थिति से जुड़ी हुई है, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँचने की व्यक्तियों की क्षमता को प्रभावित करती रहती है, जिससे उनकी ऊपर की ओर गतिशीलता की संभावनाएँ प्रभावित होती हैं। हाल के दशकों में, इन असमानताओं को दूर करने के लिए विभिन्न शैक्षिक सुधार और सकारात्मक कार्रवाई नीतियाँ लागू की गई हैं। इन उपायों का उद्देश्य हाशिए पर पड़ी जातियों को शैक्षिक संसाधनों और अवसरों तक अधिक पहुँच प्रदान करके खेल के मैदान को समतल करना है। हालाँकि, इन प्रयासों के बावजूद, महत्वपूर्ण अंतर बने हुए हैं। ऐसी नीतियों की प्रभावशीलता और जिस हद तक उन्होंने वास्तविक जातिगत गतिशीलता को सुविधाजनक बनाया है, वह चल रही बहस का विषय है। यह अध्ययन जाति पहचान, शैक्षिक पहुँच और सामाजिक गतिशीलता के बीच जटिल अंतर्संबंध का पता लगाने का प्रयास करता है। वर्तमान डेटा और रुझानों की जाँच करके, हमारा उद्देश्य निचली जातियों के व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं और उनकी सामाजिक गतिशीलता पर शैक्षिक हस्तक्षेपों के प्रभाव को समझना है। हमारा उद्देश्य इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करना है कि जाति किस तरह से शैक्षिक

परिणामों को आकार देती है और शैक्षिक समानता को बढ़ाने के लिए रणनीतियों की पहचान करना है। इन गतिशीलता को समझना नीतियों को डिजाइन करने के लिए महत्वपूर्ण है जो जाति व्यवस्था द्वारा जारी प्रणालीगत असमानताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करती हैं। इस विश्लेषण के माध्यम से, हम सामाजिक न्याय और शैक्षिक सुधार पर व्यापक प्रवचन में योगदान करने की उम्मीद करते हैं, शैक्षिक अवसर के लिए अधिक समावेशी दृष्टिकोण की वकालत करते हैं जो सभी व्यक्तियों का समर्थन करता है, चाहे उनकी जाति की पृष्ठभूमि कुछ भी हो। ऐतिहासिक रूप से, जाति-आधारित समाजों में शिक्षा तक पहुँच स्तरीकृत रही है, जिसमें विशेषाधिकार प्राप्त जातियों के पास अपने हाशिए के समकक्षों की तुलना में शैक्षिक संस्थानों और संसाधनों तक अधिक पहुँच है। यह असमानता न केवल सामाजिक असमानताओं को कायम रखती है बल्कि निचली जातियों के लोगों के बीच आर्थिक और व्यक्तिगत विकास की क्षमता को भी सीमित करती है। शैक्षिक प्राप्ति सामाजिक गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण कारक है, जो किसी व्यक्ति की बेहतर रोजगार हासिल करने, आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने और उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्राप्त करने की क्षमता को प्रभावित करती है। जाति-आधारित असमानताओं को कम करने या बढ़ाने में शैक्षिक संस्थानों की भूमिका रुचि का एक प्रमुख क्षेत्र है। स्कूल और विश्वविद्यालय केवल सीखने के स्थान ही नहीं हैं, बल्कि सामाजिक वातावरण भी हैं जहाँ जातिगत गतिशीलता महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उदाहरण के लिए, शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षित सीटें और हाशिए पर पड़े छात्रों के लिए छात्रवृत्ति जैसी सकारात्मक कार्रवाई नीतियों की मौजूदगी पहुँच को बढ़ावा देने में सहायक रही है। हालाँकि, इन नीतियों की प्रभावशीलता कार्यान्वयन और क्षेत्रीय अंतरों के आधार पर व्यापक रूप से भिन्न हो सकती है।

जाति में गतिशीलता

जबकि आम धारणा यह रही है कि जाति व्यवस्था स्तरीकरण की एक 'बंद' व्यवस्था है, लेकिन वास्तव में यह सत्य से कोसों दूर है। कोई भी समाज स्थिर नहीं होता और यहाँ तक कि पारंपरिक व्यवस्था में भी जहाँ किसी व्यक्ति के कर्मकांड और व्यावसायिक स्थिति का निर्धारण मुख्य रूप से उसके गुणों के आधार पर होता था, पुरस्कारों और संसाधनों तक पहुँच और ऊपर-नीचे दोनों ही तरह की सामाजिक स्वतंत्रता पूरी तरह से अनुपस्थित नहीं थी। जाति व्यवस्था में सामाजिक गतिशीलता जाति और वर्ग और व्यवसायों के बीच बढ़ती विसंगति, जजमानी दायित्वों का खत्म होना, शुद्धता और प्रदूषण के बारे में कठोरता और धर्मनिरपेक्ष जीवन शैली की स्वीकृति में स्पष्ट है। श्रीनिवास बताते हैं कि पुराने दिनों में गतिशीलता के दो प्रमुख स्रोत थे। पहला राजनीतिक व्यवस्था की तरलता थी, जिसने नई जातियों के लिए क्षत्रियों का दर्जा ग्रहण करना और सत्ता का प्रयोग करना संभव बना दिया। दूसरा सीमांत भूमि की उपलब्धता थी जिसे खेती के अंतर्गत लाया जा सकता था। ऊपर की ओर गतिशीलता के इन दो उपलब्ध मार्गों के परिणामस्वरूप, रेड्डी, मराठा जैसी प्रमुख जातियों के नेता राजनीतिक शक्ति पर कब्ज़ा कर सकते थे और क्षत्रिय का दर्जा प्राप्त कर सकते थे। बंगाल की मध्ययुगीन पाल जाति मूल रूप से शूद्र थी। गुजरात के पाटीदारों की उत्पत्ति किसान जाति के रूप में हुई। जब किसी प्रमुख जाति का नेता राजा या राजा के पद पर पहुंच जाता था, तो यह अन्य सदस्यों के लिए गतिशीलता का स्रोत बन जाता था और उच्च जातियों की प्रथाओं और जीवन शैली को अपनाने से यह मजबूत होता था।

गतिशीलता का स्तर

गतिशीलता व्यक्ति, परिवार और समूह के स्तर पर हुई है। शर्मा ने गतिशीलता के इन स्तरों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया है।

परिवार के भीतर एक व्यक्ति की गतिशीलता: कुछ व्यक्ति भले ही निम्न जाति के हों, लेकिन उनके परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में उनकी स्थिति और प्रतिष्ठा बेहतर हो सकती है। यह किसी के व्यक्तित्व लक्षणों जैसे ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, शिक्षा प्राप्त करना और अन्य उपलब्धियों के कारण हो सकता है। इसी तरह उच्च पद का व्यक्ति गलत कामों और आलसी आदतों के कारण अपनी स्थिति खो सकता है। इससे व्यक्ति की गतिशीलता नीचे की ओर हो सकती है। इसलिए व्यक्तिगत गतिशीलता व्यक्ति की क्षमताओं या उसकी कमी का परिणाम है और इसलिए यह जाति की प्रतिष्ठा को प्रभावित नहीं करती है और प्रकृति में कम से कम कॉर्पोरेट है।

जाति के भीतर अल्पसंख्यक परिवारों की गतिशीलता: इस तरह की गतिशीलता परिवारों के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं से जुड़ी हुई है। स्थिति में सुधार भूमि और शिक्षा के अधिग्रहण का परिणाम हो सकता है जिसे पोशाक, जीवन शैली और अनुष्ठानों के संबंध में उच्च जाति की प्रथाओं का अनुकरण करके और भी दोहराया जाता है। इस प्रकार की गतिशीलता प्रकृति में सहयोगात्मक नहीं होती है और इसे 'ऊर्ध्वाधर गतिशीलता' के बजाय 'क्षैतिज गतिशीलता' के रूप में देखा जा सकता है जो स्थिति भेदों के बीच की खाई को पाटती है। बर्टन स्टीन बताते हैं कि यह प्रवृत्ति मध्यकालीन काल में प्रमुख थी।

परिवार या समूह के बहुमत की गतिशीलता: इस प्रकार की गतिशीलता प्रकृति में 'कॉर्पोरेट' होती है। इसमें प्रतिष्ठा, सम्मान, स्थिति पर सामूहिक स्थिति शामिल होती है और इसलिए शुद्धता और प्रदूषण के संबंध में सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं में परिवर्तन द्वारा चिह्नित होती है। कुछ जातियाँ अशुद्ध और अपमानजनक मानी जाने वाली प्रथाओं को त्याग कर अपनी स्थिति में सुधार करती हैं। संस्कृतिकरण मुख्य प्रक्रिया थी जिसने इन जातियों को पदानुक्रम में ऊपर जाने और ऊपर की ओर गतिशीलता के अपने दावे को वैध बनाने में मदद की।

भारत में शैक्षिक परिदृश्य

शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता की गतिशीलता में जाने से पहले, भारत में शैक्षिक परिदृश्य को समझना आवश्यक है। भारत में एक विविध और व्यापक शिक्षा प्रणाली है जो ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों से लेकर प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों तक कई तरह के संस्थानों में फैली हुई है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ने 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शिक्षा को एक मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित किया, जिसका उद्देश्य शैक्षिक असमानताओं को पाटना है।

शिक्षा का वादा

भारत में शिक्षा एक बेहतर भविष्य का वादा करती है। इसे गरीबी के चक्र से बाहर निकलने, आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने और जीवन के विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँचने के साधन के रूप में देखा जाता है। हाशिए पर पड़े समुदायों और ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के लिए, शिक्षा को सामाजिक पदानुक्रमों को चुनौती देने और समाज में पैर जमाने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा जाता है।

पहुँच और गुणवत्ता में चुनौतियाँ

हालाँकि, इस वादे को साकार करने का मार्ग चुनौतियों से भरा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच असमान बनी हुई है, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों, लिंग और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बीच असमानताएँ हैं। अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, योग्य शिक्षकों की कमी और कई स्कूलों में संसाधनों की कमी शिक्षा की गुणवत्ता में बाधा डालती है।

जाति और सामाजिक स्तरीकरण

जाति-आधारित भेदभाव का मुद्दा भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में बहुत बड़ा है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण कोटा जैसी सकारात्मक कार्रवाई नीतियों का उद्देश्य ऐतिहासिक अन्याय को दूर करना है, लेकिन वे विवादास्पद बहस को भी जन्म देते हैं। इन नीतियों की हाशिए पर पड़े समूहों को अवसर प्रदान करने के लिए प्रशंसा की जाती है और तनाव और विपरीत भेदभाव की धारणाएँ पैदा करने के लिए आलोचना की जाती है।

आर्थिक बाधाएँ

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच निर्धारित करने में आर्थिक कारक महत्वपूर्ण होते हैं। निजी स्कूल, जिन्हें अक्सर बेहतर शिक्षा प्रदान करने वाला माना जाता है, महंगे होते हैं और अक्सर आर्थिक रूप से वंचित परिवारों की पहुँच से बाहर होते हैं। शिक्षा में यह आर्थिक विभाजन सामाजिक असमानताओं को बनाए रखता है और उन लोगों की संभावनाओं को सीमित करता है जो गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकते।

सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा

इस पृष्ठभूमि के विरुद्ध, भारत में शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता के बीच संबंध अवसरों और बाधाओं का एक जटिल अंतर्संबंध बन जाता है। शिक्षा वास्तव में व्यक्तियों को बेहतर नौकरी पाने और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करके सामाजिक गतिशीलता के लिए उत्प्रेरक का काम कर सकती है। फिर भी, समाज के सभी वर्गों में ऊपर की ओर गतिशीलता को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षा की क्षमता एक समान नहीं है।

सामाजिक गतिशीलता को आकार देने वाले कारक

शिक्षा की गुणवत्ता: किसी व्यक्ति को मिलने वाली शिक्षा की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण कारक है। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा व्यक्तियों को प्रासंगिक कौशल और ज्ञान से लैस करती है, जिससे उनकी रोजगार क्षमता और आय-अर्जन क्षमता बढ़ती है। इसके विपरीत, खराब गुणवत्ता वाली शिक्षा गरीबी के चक्र को बनाए रख सकती है और गतिशीलता के अवसरों को सीमित कर सकती है।

सामाजिक पृष्ठभूमि: जाति और सामाजिक-आर्थिक स्थिति सहित किसी व्यक्ति की सामाजिक पृष्ठभूमि, शिक्षा के सामाजिक गतिशीलता में बदलने की सीमा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर पड़े समूहों को शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी प्रणालीगत बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे नौकरी के अवसरों और संसाधनों तक उनकी पहुँच सीमित हो जाती है।

उच्च शिक्षा तक पहुँच: उच्च शिक्षा तक पहुँच सामाजिक गतिशीलता का एक प्रमुख चालक है। उच्च शिक्षा संस्थान, विशेष रूप से प्रतिष्ठित संस्थान, अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियों और सामाजिक स्थिति के द्वार खोल सकते हैं। हालाँकि, इन संस्थानों में सीटों के लिए सीमित पहुँच और भयंकर प्रतिस्पर्धा अक्सर विशेषाधिकार प्राप्त पृष्ठभूमि वाले लोगों के पक्ष में होती है।

सकारात्मक कार्रवाई नीतियाँ: सकारात्मक कार्रवाई नीतियाँ ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के लिए शिक्षा और रोजगार में आरक्षित सीटें और अवसर प्रदान करके सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालाँकि इन नीतियों ने ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने में प्रगति की है, लेकिन उनका कार्यान्वयन और प्रभाव बहस का विषय बना हुआ है।

सामाजिक गतिशीलता की चुनौतियाँ

भारत में सामाजिक गतिशीलता के साधन के रूप में शिक्षा की पूरी क्षमता को साकार करने में कई चुनौतियाँ बाधा डालती हैं:

पहुँच में असमानता: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक असमान पहुँच एक व्यापक मुद्दा बना हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र, जहाँ भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा रहता है, अक्सर अच्छी तरह से सुसज्जित स्कूलों और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी होती है। शिक्षा तक पहुँच में यह ग्रामीण-शहरी विभाजन सामाजिक असमानताओं को बढ़ाता है।

आर्थिक बाधाएँ: शिक्षा की लागत, विशेष रूप से उच्च शिक्षा, निषेधात्मक रूप से अधिक हो सकती है। ट्यूशन फीस, किताबें और अन्य खर्चों का वित्तीय बोझ कई लोगों को उन्नत डिग्री हासिल करने से रोकता है, जिससे उनकी गतिशीलता की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं।

रोज़गार असमानताएँ: भारत में नौकरी के बाज़ार में असमानताएँ हैं, जिसमें वेतन अंतर और आबादी के कुछ क्षेत्रों के लिए सीमित अवसर शामिल हैं। भर्ती प्रथाओं में भेदभाव और पूर्वाग्रह सामाजिक गतिशीलता को और भी सीमित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन ने जातिगत गतिशीलता और शैक्षिक अवसरों तक पहुँच के बीच संबंधों की व्यापक जाँच की है, जिसमें लगातार असमानताओं और विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से की गई प्रगति पर प्रकाश डाला गया है। विश्लेषण इस बात पर जोर देता है कि सकारात्मक कार्रवाई की नीतियों और शैक्षिक सुधारों ने हाशिए पर पड़ी जातियों के लिए पहुँच में सुधार करने में प्रगति की है, लेकिन अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष बताते हैं कि शैक्षिक समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतियों की शुरूआत के बावजूद, सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ, भेदभावपूर्ण प्रथाएँ और ढाँचागत सीमाएँ जैसी प्रणालीगत बाधाएँ निम्न-जाति के व्यक्तियों की शैक्षिक उन्नति में बाधा डालती रहती हैं। ये कारक अवसरों और परिणामों के असमान वितरण में योगदान करते हैं, असमानता के चक्र को कायम रखते हैं और वास्तविक जातिगत गतिशीलता की संभावना को सीमित करते हैं। अध्ययन इन असमानताओं को दूर करने के लिए लक्षित और संदर्भ-संवेदनशील दृष्टिकोणों के महत्व पर भी प्रकाश डालता है। व्यापक सामाजिक-आर्थिक सहायता प्रणालियों के साथ सकारात्मक कार्रवाई की नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन इस अंतर को पाटने के लिए महत्वपूर्ण है। विभिन्न क्षेत्रों के केस स्टडीज़ बताते हैं कि जहाँ कुछ क्षेत्रों ने ऊपर की ओर गतिशीलता को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक हस्तक्षेपों का सफलतापूर्वक लाभ उठाया है, वहीं अन्य अभी भी महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना कर रहे हैं जिनके लिए अनुकूलित समाधान की आवश्यकता है। आगे बढ़ते हुए, नीति निर्माताओं, शिक्षकों और समुदाय के नेताओं के लिए ऐसी रणनीतियों पर सहयोग करना अनिवार्य है जो न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को बढ़ाएँ बल्कि हाशिए पर पड़े समुदायों को प्रभावित करने वाली अंतर्निहित सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं को भी संबोधित करें। सिफारिशों में वंचित छात्रों के लिए सहायता प्रणालियों को मजबूत करना, बुनियादी ढांचे में निवेश करना और समावेशी शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देना शामिल है जो जाति-आधारित भेदभाव का सक्रिय रूप से मुकाबला करते हैं। निष्कर्ष में, जबकि प्रगति हुई है, सच्ची शैक्षिक समानता और जातिगत गतिशीलता प्राप्त करने की यात्रा जारी है। निरंतर शोध, नीति नवाचार और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता एक अधिक न्यायसंगत शैक्षिक परिदृश्य बनाने के लिए आवश्यक है जहाँ सभी व्यक्तियों को, जाति की पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, सफल होने और समाज में योगदान करने का अवसर मिले।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

[1] "बजट 2011: शिक्षा को 'अब तक का सबसे अधिक' आवंटन मिला; जीडीपी में हिस्सेदारी 2.9% पर स्थिर रही". द इकोनॉमिक टाइम्स। 2 फरवरी 2011। मूल से 5 मार्च 2011 को संग्रहीत। 5 मार्च 2011 को पुनःप्राप्त।

[2] "भारत साक्षरता दर"। यूनिसेफ। मूल से 25 दिसंबर 2014 को संग्रहीत। 10 अक्टूबर 2013 को पुनःप्राप्त।

[3] कुमार, विनय (31 मार्च 2011)। "जनगणना 2011: जनसंख्या 1,210.2 मिलियन आंकी गई"। द हिंदू। मूल से 11 अप्रैल 2012 को संग्रहीत। 9 अप्रैल 2012 को पुनःप्राप्त।

[4] "विश्व विकास संकेतक: शिक्षा में भागीदारी"। विश्व बैंक। मूल से 25 दिसंबर 2014 को संग्रहीत। 21 अगस्त 2014 को पुनःप्राप्त।

[5] "भारत में शिक्षा"। विश्व बैंक। मूल से 15 जून 2012 को संग्रहीत। 9 अप्रैल 2012 को पुनःप्राप्त।

[6] "शैक्षणिक सांख्यिकी एक नज़र में - भारत सरकार" (पीडीएफ)। education.gov.in. मूल से 28 फरवरी 2012 को संग्रहीत (पीडीएफ)। 17 मार्च 2012 को पुनःप्राप्त।

[7] किंगडन, गीता गांधी (2 अक्टूबर 2013)। "भारत में निजी स्कूली शिक्षा की परिघटना: एक समीक्षा"। जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज। 56 (10): 1795–1817। doi:10.1080/002 20388.2013.1715943. ISSN 0022-0388. S2CID 158006322. मूल से 6 अप्रैल 2011 को संग्रहीत। 6 अप्रैल 2011 को पुनःप्राप्त।

[8] जैन, चारु और नारायण प्रसाद। भारत में माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता: अवधारणाएँ, संकेतक और माप। सिंगापुर: स्प्रिंगर नेचर, 2014. लिटिल, एंजेला डब्ल्यू.; लेविन, कीथ एम. (11 जुलाई 2011)। "बुनियादी शिक्षा तक पहुँच की नीतियाँ, राजनीति और प्रगति"। जर्नल ऑफ़ एजुकेशन पॉलिसी। 26 (4): 477–482. doi:10.1080/02680939.2011.555004. ISSN 0268-0939. S2CID 145170025. पठानिया, रजनी (जनवरी 2013)।

[9] "भारत में साक्षरता: प्रगति और असमानता 17.1 (2013)" (पीडीएफ)। बांग्लादेश ई-जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी। 17 (1): 57–64. eISSN 1819-8465. मूल से 12 जुलाई 2013 को संग्रहीत (पीडीएफ)। 30 नवंबर 2013 को लिया गया।